अनुक्रमणिका

I. संक्षिप्त संकेत सूची

II. प्रस्तावना

प्रथम अध्याय

पृष्ठ संख्या

1. ज्ञानरंजन व्यक्ति और साहित्यकार के रूप में 1-34

1.1 व्यक्ति ज्ञानरंजन : जीवनरेखा : तथ्यों के आईने में

1.1.1 जीवन रेखा : प्रकृति एवं प्रवृत्ति के आईने में

1.2.1 साहित्यकार ज्ञानरंजन : परिवेश का प्रभाव एवं लेखक की निर्मिति

1.2.2 लेखक का तहख़ाना

1.2.3 ज्ञानरंजन का साहित्य एवं लेखकीय विकास : तथ्यों के आईने में

1.3 कुछ अन्य आवश्यक तथ्य

1.4 लेखक के वैचारिक धरातल

द्वितीय अध्याय

2. साठोत्तरी हिंदी कहानी में संवेदना का परिप्रेक्ष्य और ज्ञानरंजन की कहानियाँ 35-72

2.1. साठोत्तरी हिंदी कहानी : तात्पर्य और परिचय

2.2 संवेदना का बदलता हुआ स्वरूप : हिंदी कहानी के संदर्भ में

2.2.1 अकहानी
2.2.2 सचेतन कहानी
2.2.3 सहज कहानी
2.2.4 समांतर कहानी
2.2.5 सक्रिय कहानी
2.3 साठोत्तरी हिंदी कहानी के संवेदनात्मक धरातल और ज्ञानरंजन की कहानियाँ
2.3.1 संबंधों में विघटन की स्थिति
2.3.2 स्त्री-पुरुष संबंधों का नया समीकरण
2.3.3 प्रेम का नया चेहरा
2.3.4 नगरबोध का संदर्भ
2.3.5 अजनबीपन और अकेलापन
2.3.6 व्यर्थताबोध
2.3.7 औद्योगीकरण

तृतीय अध्याय

3. **मध्यवर्ग की संकल्पना : उद्‌भव, विकास एवं सांप्रतिक स्वरूप** 73 - 108
3.1 वर्ग की अवधारणा
3.2 मध्यवर्ग : परिभाषा एवं परिव्याप्ति
3.2.1 प्राचीन मध्यवर्ग
3.2.2 नया मध्यवर्ग
3.2.3 शहरी मध्यवर्ग
3.2.4 ग्रामीण मध्यवर्ग

3.3 व्यावसायिक मध्यवर्ग
3.3.1 औद्योगिक मध्यवर्ग
3.3.2 भूमि से संबंधित मध्यवर्ग
3.3.3 शिक्षित मध्यवर्ग
3.3.4 उच्च मध्यवर्ग
3.3.5 निम्न मध्यवर्ग
3.4 वर्ग चेतना के संदर्भ में मध्यवर्ग
3.4.1 मध्यवर्ग एवं वर्ग संगठन
3.4.2 मध्यवर्ग एवं वर्ग संघर्ष
3.5 मध्यवर्ग : उद्‌भव एवं विकास
3.6. भारत में शिक्षित मध्यवर्ग का वर्त्तमान स्वरूप

चतुर्थ अध्याय

4. ज्ञानरंजन की कहानियों में मध्यवर्ग का स्वरूप 109-164
4.1 राजनीतिक चेतना का संदर्भ और ज्ञानरंजन की कहानियाँ
4.2 सामाजिक चेतना का संदर्भ और ज्ञानरंजन की कहानियाँ
4.3 मध्यवर्ग का पारिवारिक समीकरण और ज्ञानरंजन की कहानियाँ (संयुक्त परिवार तथा एकल परिवारों का संदर्भ)
4.3.1 मध्यवर्गीय समाज में दांपत्य जीवन और ज्ञानरंजन की कहानियाँ
4.4 सामाजिक संबंधों में छद्‌म
4.5 मध्यवर्ग का सांस्कृतिक संदर्भ और ज्ञानरंजन की कहानियाँ
4.5.1 मध्यवर्गीय संस्कार और ज्ञानरंजन की कहानियाँ
4.6 संस्कृति का मध्यवर्गीय मुहावरा
4.6.1 अर्थ प्रधान संस्कृति और ज्ञानरंजन की कहानियाँ

4.7 अर्थ-चेतना का संदर्भ और ज्ञानरंजन की कहानियाँ
4.8 काम-भावना का संदर्भ एवं ज्ञानरंजन की कहानियाँ
4.9 मध्यवर्गीय छद्म बौद्धिकता और ज्ञानरंजन की कहानियाँ
4.10 ज्ञानरंजन की कहानियों में मध्यवर्ग का स्वरूप : हिंदी आलोचना के वातायन से

पंचम अध्याय

5. ज्ञानरंजन के मध्यवर्गीय पात्रों का विश्लेषण 165-195
5.1 बकौल ज्ञानरंजन उनके पात्र.....
5.2 ज्ञानरंजन के पात्रों के संदर्भ में हिंदी आलोचना : एक दृष्टि
5.3 विविध संदर्भों के आईने में ज्ञानरंजन के मध्यवर्गीय पात्रों का विश्लेषण
5.3.1 वैयक्तिकता
5.3.2 विसंगतिबोध
5.3.3 असंतोष
5.3.4 व्याकुलता
5.3.5 कुंठा एवं संत्रास
5.3.6 अकेलापन
5.3.7 अजनबीपन

षष्ठ अध्याय

6. नगरबोध, मध्यवर्ग और ज्ञानरंजन की कहानियाँ 196-229
6.1 नगर और नगरबोध
6.2 ज्ञानरंजन का नगरबोध

6.3 नगर का परिवेश, नगरबोध के विविध आयाम और साठोत्तरी कहानी

6.4 नगरबोध और ज्ञानरंजन की कहानियाँ

सप्तम अध्याय

7. व्यंग्य, मध्यवर्ग और ज्ञानरंजन की कहानियाँ 230-270

7.1 व्यंग्य और भारतीय साहित्य चिंतक

7.2 व्यंग्य और विदेशी साहित्य चिंतक

7.3 शब्द शक्तियाँ और व्यंग्य

7.4 व्यंग्य का सृजन-चक्र

7.5 व्यंग्य की वांछनीयता

7.6 व्यंग्य और ज्ञानरंजन की तत्संबंधी अवधारणा

7.7 ज्ञानरंजन की कहानियों में व्यंग्य : हिंदी आलोचना के झरोखे से

7.8 मध्यवर्गीय समाज पर व्यंग्य की स्थितियाँ और ज्ञानरंजन की कहानियाँ

- **उपसंहार** 271-280

- **ग्रंथ-सूची** 281-313

- **परिशिष्ट :**

  (क) ज्ञानरंजन से साक्षात्कार 314-328

  (ख) ज्ञानरंजन के छाया-चित्र 329-333